Epitome : International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN : 2395-6968

''वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध का उनके मूल्यों तथा शैक्षणिक उपलब्धि के सन्दर्भ में अध्ययन।''

Dr. Rekha Yadav
Research Scholar
Ph.D. in Education

सारांश

परिवार बालक की पहली पाठशाला है जहाँ उसे प्रेम, सहानुभूति तथा सुरक्षा मिलती है। वहीं उसका पालन–पोषण तथा विकास होता है। परिवार ही बालक की जीवन बगिया की सुन्दरता को बनाए रखता है। बालक का स्वभाव एक 'कोरी स्लेट' की तरह है जैसा उस पर लिखेंगे वैसा ही छप जाएगा अर्थात् बालक को जैसा ढाला जाएगा वह वैसा ही ढल जाएगा। यदि बालक सुयोग्य और चरित्रवान है तो हम कहते हैं कि वह बालक अच्छे पारिवारिक वातावरण में पला बड़ा हुआ है। इसलिए बालक के जीवन पर पड़ने वाले पारिवारिक सम्बन्धों के द्वारा मूल्यों तथा शैक्षणिक उपलब्धि के प्रभावों को जानने के लिए इसकी आवश्यकता महसूस की गई। इसलिए शोधकर्त्री ने इस विषय का चुनाव किया। शोध अध्ययन हेतु प्रतिदर्श के रूप में वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के 600 विद्यार्थियों का चुनाव किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सह–सम्बन्ध सांख्यिकी प्रविधि का प्रयोग किया गया।

 Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.

RESEARCH PAPER

प्रस्तावना

पारिवार के सभी लोग आपस में किसी ना किसी सम्बन्ध से बंधे होते हैं। उनका सम्बन्धों में बंधा होना ही पारिवारिक सम्बन्ध कहलाता है। जैसे – माता–पिता, भाई–बहन, चाचा–चाची के आपस में रिश्ते बने होते हैं। इन सम्बन्धों में बंधे होने के कारण इनकी एक दूसरे सम्बन्धों के प्रति कुछ जिम्मेदारियाँ भी होती है। यदि परिवार के सभी लोग आपस में अपनी जिम्मेदारियों को ठीक से निभाते हैं तथा परिवार के लोगों की मदद करते है तो वह परिवार एक समृद्धशाली परिवार बनता है तथा समाज में अपनी जगह बनाता है और अगर सम्बन्ध अच्छे नहीं होते तो कोई भी उस परिवार को पसन्द नहीं करता। अच्छे परिवारो का असर उनके बच्चों पर भी अच्छा ही पड़ता है वे बच्चे भी घर, पड़ोस तथा विद्यालय में अपनी जिम्मेदारियों को ठीक से निभाते हैं। इसलिए हमें घर व विद्यालय के वातावरण के साथ–साथ आस–पड़ोस का वातावरण भी स्वस्थ बनाना पड़ेगा, क्योंकि बच्चे के व्यक्तित्त्व को बनाने में कुछ योगदान आस–पड़ोस का भी होता है। गुप्ता और रानी (2015) ने शोधाध्ययनोपरांत पाया कि घर के वातावरण तथा आस–पड़ौस के वातावरण छात्र के व्यक्तित्त्व को बढ़ाने में मदद करता है। उन्होंने बताया कि घर के अच्छे वातावरण का बच्चे के संवेगात्मक, ज्ञानात्मक तथा सामाजिक व्यक्तित्त्व पर प्रभाव पड़ता है तथा अच्छे वातावरण का ही नतीजा है कि बच्चे के परिवार के सभी लोग आपस में प्रेम–पूर्वक रहते हैं तथा बच्चों की परवरिश ठीक से करते है तथा परिवार के एक–दूसरे सदस्यों के साथ भी सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं इस सकारात्मक दृष्टिकोण के प्रभाव से ही बालक के अन्दर मूल्यों और आदर्शों का विकास होता है तथा बालक में उत्तम नागरिकता के गुणों का विकास करके उसके व्यक्तित्व का निर्माण करने में सहायक होता है। परंतु आज हमारे देश में परिवारों की दशा में भारी परिवर्तन हो रहा है और यह परिवर्तन का ही नतीजा है कि भारतीय परिवारों में गुणों की कमी होती जा रही है। पारिवारिक सम्बन्ध टूटते जा रहे हैं। परिवार के सदस्यों के बीच प्रेम और सहानुभूति नाम की चीज ही नहीं रही जो कि एक परिवार में होनी चाहिए। इनका कारण हम पश्चिमीकरण, औधोगिकरण तथा आर्थिक दबाव कह सकते है, क्योंकि आज हमारी आवश्यकताओं का बढ़ जाना तथा विदेशों की देखा–देखी ऐशो–आराम तथा विलासता की जिन्दगी के कारण खर्चे बहुत अधिक बढ़ गए हैं जिसके कारण ऐसी नौबत आ गई है एक आदमी की कमाई से काम नहीं चलता है, इसलिए कमाई के लिए पति–पत्नी दोनों को नौकरी करनी पड़ती है। ऐसी स्थिति में वे बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते तथा बच्चे अपने को उपेक्षित महसूस करते है। वे बच्चे माँ–बाप के प्रेम से वंचित रहने के कारण हर वक्त क्रोध और आक्रोश में रहते हैं। उनमें विद्रोह की भावना पनपती रहती है। वे तनाव में घिरे रहते हैं। उनमें हर वक्त असुरक्षा की भावना बनी रहती है, तो ऐसे बदलते स्वरूप को देखकर हम

 Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.

बच्चें को कैसे मूल्यवान बना सकते हैं। कैसे उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ा सकते है। यह कठिन ही नहीं नामुमकिन भी है, परन्तु इस असम्भव कार्य को सम्भव बनाने के लिए परिवार की सबसे बड़ी विशेषता है प्रेम, विश्वास और सहयोगपूर्ण वातावरण बनाए रखना। प्रेम, विश्वास और सहयोगपूर्ण वातावरण तीनों यदि एकत्रित हो जाते हैं तो बच्चे का विकास आसानी से होता रहता है तथा विकास के साथ–साथ बच्चे में मूल्य तथा शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाने के अवसर भी प्राप्त होते रहते हैं।

समस्या का कथन

''वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध का उनके मूल्यों तथा शैक्षणिक उपलब्धि के सन्दर्भ में अध्ययन।''

शोध के उद्देश्य

- वरिष्ठ मायमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों का उनके मूल्यों के संदर्भ में अध्ययन करना।
- वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के सन्दर्भ में अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

- वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों तथा मूल्यों में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं।
- वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों तथा शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं हैं।

परिभाषाएँ

परिवार –

क्लेयर – ''परिवार से हम सम्बन्धों की वह व्यवस्था समझते है जो माता–पिता तथा उनकी संतानों के बीच में पाई जाती है।''

ऑरनाल्ड ग्रीन – ''परिवार संस्थायीकृत सामाजिक समूह है जिस पर जनसंख्या प्रस्थापन का भार है।''

मूल्य –

प्रोफेसर गुड – ''मूल्य एक ऐसी विशेषता है जो मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, नैतिक एवं सुरूचिपूर्ण विचारों के आधार पर आन्तरिक विश्वासों से निर्मित होती है जिनसे व्यक्ति को सुरक्षा का आधार मिलता है।''

 Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.

शैक्षिक उपलब्धि –

फ्रीमैन के अनुसार – ''शैक्षिक उपलब्धि वह अभिकल्प है जो एक विषय या पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में बालक के ज्ञान व कौशल का मापन करता है। शैक्षिक उपलब्धि को विद्यालय का वातावरण परिवार, समाज का वातावरण, बुद्धिलब्धि, सृजनात्मक आदि सभी कारक प्रभावित करते हैं।

अध्ययन विधि

वर्तमान शोध में वर्णानात्मक सर्वेक्षण विधि को प्रयुक्त किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

डॉ जी पी शैरी तथा डॉ ज`सी सिन्हा द्वारा रचित पारिवारिक सम्बन्ध परिसूची का प्रयोग किया गया है।

विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को जांचने के लिए दसवीं के नम्बरों का प्रयोग किया गया है। डॉ जी पी शैरी तथा डॉ आर पी वर्मा द्वारा बनी व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन का न्यादर्श तथा सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए रेवाड़ी जिले के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के 11वीं व 12वीं कक्षा के 600 विद्यार्थियों को चुना गया तथा प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सह–सम्बन्ध प्रविधि का प्रयोग किया है।

वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों तथा मूल्यों का सहसम्बन्ध

विद्यार्थियों की संख्या	**च्र (पारिवारिक सम्बन्ध)**	**च्र (मूल्य)**	**ष्तष् का मान**	**सार्थकता स्तर**
600	पारिवारिक सम्बन्ध	धार्मिक मूल्य	– 0.033	असार्थकता
		सामाजिक मूल्य	– 0.121′	सार्थकता 0.01, 005
		लोकतांत्रिक मूल्य	0.596′	सार्थकता 0.01, 005
		सौन्दर्यात्मक मूल्य	– 0.105′	सार्थकता 005
		आर्थिक मूल्य	0.028	असार्थकता
		ज्ञानात्मक मूल्य	–0.034	असार्थकता

 Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.

		सुखवादी मूल्य	0.102′	सार्थकता 0.05
		शक्ति मूल्य	0.020	असार्थकता
		पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य	0.065	असार्थकता
		स्वास्थ्य मूल्य	0.010	असार्थकता

तालिका 1

उपरोक्त तालिका 1 के अनुसार विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध तथा मूल्यों के सह–सम्बन्ध को दर्शाया गया है।

विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध तथा धार्मिक मूल्य के बीच ष्तष मान –0.033 पाया गया जो कि 0.1 तथा 0.5 दोनों स्तरों के मान से कम है। इससे पता चला कि पारिवारिक सम्बन्ध तथा धार्मिक मूल्य के बीच कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है। इससे स्पष्ट हो गया कि विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध का उनके धार्मिक मूल्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध एवं सामाजिक मूल्य के मध्य ष्तष मान –0.121 पाया गया जो कि 0.01 (0.115) तथा 0.05 (0.088) दोनों स्तरों के मान से अधिक है। इससे इंगित हुआ कि बच्चें के पारिवारिक सम्बन्ध व बच्चों के सामाजिक मूल्य के मध्य ऋणात्मक सहसम्बन्ध है, जिससे परिकल्पना 1 पारिवारिक सम्बन्ध का मूल्यों पर कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाता अस्वीकृत होती है। इससे निष्कर्ष निकलता है कि यदि बच्चों, माता–पिता तथाा घर के अन्य सदस्यों के बीच सम्बन्ध मधुर होते हैं तो उन बच्चों का समाज के साथ भी समायोजन उच्च श्रेणी का होता है।

विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध तथा लोकतांत्रिक मूल्य के बीच ष्तष मान 0.596 है जो कि 0. 01 तथा 0.05 दोनों सार्थक स्तरों के मान से अधिक है। इससे स्पष्ट हुआ कि पारिवारिक सम्बन्ध तथा लोकतांत्रिक मूल्यों के बीच सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया जिससे परिकल्पना 1 अस्वीकृत सिद्ध हुई तथा स्पष्ट हुआ कि पारिवारिक सम्बन्ध का विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्य पर प्रभाव पड़ता है अर्थात् बालक, परिवार के लिए अपनी जिम्मेदारी, मान–सम्मान तथा प्रेम को समझते हैं तो वे देश के मान–सम्मान तथा देश के लिए अपनी जिम्मेदारी निभाने से भी पीछे नहीं हटते।

विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध तथा सौन्दर्यात्मक मूल्य का ष्तष मान 0.105 है जो कि 0.01 पर असार्थक तथा 0.05 सार्थक है। इससे मालूम चला कि विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध तथा सौन्दर्यात्मक मूल्य में ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। इस प्रकार पारिवारिक सम्बन्धों का बच्चों के सौन्दर्यात्मक मूल्य पर प्रभाव पड़ता है। अतः परिवार के सभी सदस्य बच्चों को सिखाते

 Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.

है कि यह संसार तथा इस संसार के प्रत्येक वस्तु सौन्दर्य से भरी हुई है और इस सुन्दर जीवन को सहजतापूर्वक जीने के लिए बालक को परिवार और प्रकृति से सामंजस्य करना पड़ेगा।

विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध तथा आर्थिक मूल्य का ष्तष मान 0.028 है जो कि दोनों स्तर मानों (0.01, 0.05) पर असार्थक पाया गया, जिससे पता चला कि पारिवारिक सम्बन्धों का बच्चों के आर्थिक मूल्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है अर्थात् पारिवारिक सम्बन्ध विद्यार्थियों में धन को अर्जित करने की सीख नहीं देते।

विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध तथा ज्ञानात्मक मूल्य का ष्तष मान –0.034 पाया गया जो कि 0.01 तथा 0.05 सार्थक स्तरों के मान से कम है। इस प्रकार पता चला कि वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध से उनका ज्ञानात्मक मूल्य प्रभावित नहीं होता अर्थात् अधिकतर परिवार में परिवारों के सदस्य काम के बोझ और कमाई के साधनों को जुटाते–जुटाते समय की कमी होने के कारण बच्चों की पढ़ाई की तरफ ध्यान नहीं दे पाते।

विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध तथा सुखवादी मूल्य पर सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया है, क्योंकि दोनों चरों का ष्तष मान 0.102 है जो 0.01 पर असार्थक तथा 0.05 पर सार्थक अर्थात् वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के माता–पिता या अन्य सदस्यों से बालको के सुखवादी मूल्य प्रभावित होते है। बच्चों के पहले गुरू माता–पिता ही होते है, इसलिए वे घर में ऐसा वातावरण बनाए रखते हैं जो बालकों को प्रेम और सुख बांटना सीखाते हैं और अपने वर्तमान को सुखी बनाकर भविष्य को दुखों से दूर रखने तथा दूसरे के जीवन को सुखी बनाना सीखाते है।

विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध तथा शक्ति मूल्य का ष्तष मान 0.020 पाया गया जो 0.01 तथा 0.05 के सार्थक स्तरों के मान से कम है जिससे इंगित हुआ कि बच्चों के पारिवारिक सम्बन्धों तथा विद्यार्थियों के शक्ति मूल्य में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है। इसका मतलब हुआ कि पारिवारिक सम्बन्ध का बच्चों के शक्ति मूल्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् पारिवारिक सम्बन्ध विद्यार्थियों में उनकी शारीरिक ताकत और शक्ति को बढ़ाने में मदद नहीं करते हैं। धन और समय की कमी इसका मुख्य कारण पाया गया।

विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध तथा पारिवारिक प्रतिष्ठा का ष्तष मान 0.065 है जो कि 0.01 तथा 0.05 के सार्थक स्तरों के मान से कम है, इससे इंगित होता है कि पारिवारिक सम्बन्धों का पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् पारिवारिक सम्बन्ध विद्यार्थियों में परिवार की प्रतिष्ठा बनाने वाले गुणों को विकसित करने में असफल रहे। इसका कारण माता–पिता का काम में व्यस्त और समय का अभाव पाया गया।

विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध तथा स्वास्थय मूल्य का ष्तष मान 0.010 है जो कि 0.01 तथा 0.05 के दोनों स्तरों के मान से कम है, इससे पता चला कि पारिवारिक सम्बन्ध का स्वास्थ्य मूल्य पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् परिवार के सदस्य बच्चों के प्रेम कारण

उनकी मनमानी इच्छाओं पर रोक नहीं लगा पाते जैसे – बच्चों द्वारा जंक फूड की मांग करना। इसके प्रभाव से उनका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है तथा बच्चे माता–पिता के कहने के बावजूद प्रातःकालीन भ्रमण करने से भी बचते हैं, जिससे उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

अंत में शोध अध्ययन के बाद पता चला कि विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों का उनके सामाजिक, लोकतांत्रिक, सौन्दर्यात्मक तथा सुखवादी मूल्य पर प्रभाव पड़ता है तथा धार्मिक आर्थिक, ज्ञानात्मक, शक्ति, पारिवारिक प्रतिष्ठा तथा स्वास्थ्य मूल्य पर प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् परिकल्पना 1 अस्वीकृत पाई गई।

वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों तथा शैक्षिक मूल्य का सहसम्बन्ध

क्रमांक संख्या	च्र	संख्या	ष्तष् का मान	सार्थकता स्तर
1.	पारिवारिक सम्बन्ध	600	0.153′	सार्थकता 0.01, 0.05
2.	शैक्षिक उपलब्धि	600		

तालिका 2

उपरोक्त तालिका 2 से इंगित होता है कि पारिवारिक सम्बन्ध तथा विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का ष्तष् मान 0.153 है जो कि 0.01 तथा 0.05 सार्थक स्तरों के मान से अधिक है, इससे पता चला कि पारिवारिक सम्बन्धों तथा बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। इस प्रकार परिकल्पना 2 अस्वीकृत हुई अर्थात् पारिवारिक सम्बन्ध बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव डालता है, क्योंकि यदि परिवार के सदस्यों तथा बालकों में सम्बन्ध मधुर है तो परिवार का वातावरण अच्छा तथा शैक्षणिक होता है यदि नहीं, तो बालक परिवार तथा परिवार के सदस्यों से दूर भागने की कोशिश करते हैं, इस कारण इसका प्रभाव बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक पड़ता है।

निष्कर्ष

1. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों और धार्मिक मूल्यों के बीच सह–सम्बन्ध के अध्ययन के बाद पता चला कि विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्य तथा पारिवारिक सम्बन्धों के बीच कोई सह–सम्बन्ध नहीं है। इसका अर्थ हुआ कि परिवार बालक को धार्मिक शिक्षा देने में अधिक मदद नहीं कर पाता, क्योंकि आज के माता–पिता स्वयं समय की कमी तथा आधुनिकता में फंसे रहने के कारण पूजा–पाठ करने से वंचित हो जाते हैं। इस प्रकार बालक अपने माता–पिता को देखता है और उनका अनुकरण करते हुए ही धार्मिक गुणों को नहीं अपना पाता।

2. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध तथा समाजिक मूल्यों के बीच सह–सम्बन्ध के अध्ययन के बाद इंगित हुआ कि पारिवारिक सम्बन्ध और सामाजिक मूल्यों

 Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.

के बीच ऋणात्मक सह–सम्बन्ध प्राप्त हुआ अर्थात् परिवार के द्वारा विद्यार्थियों में सामाजिकता का विकास होता है। यदि परिवार के सभी सदस्य आपस में प्रेमपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं, एक–दूसरे की भावनाओं तथा जरूरतों का ध्यान रखते हैं तो इन सब बातों को विद्यार्थी भी देखते हैं तथा वे भी एक–दूसरे के साथ ऐसा ही व्यवहार करते हैं।

3. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध और विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों के सह–सम्बन्ध के अध्ययन से पता चला कि दोनों के बीच सकारात्मक सह–सम्बन्ध प्राप्त हुआ है। इसका अर्थ हुआ कि परिवार के सदस्यों की राजनीति के प्रति रूचि तथा उनका अपने परिवार में भी प्रजातांत्रिक वातावरण बनाने के कारण जो सकारात्मक असर विद्यार्थियों पर पड़ता है उससे विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक भावना बढ़ती है तथा वह भावना उनमें प्रजातांत्रिक मूल्यों का विकास करती है।

4. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध और विद्यार्थियों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों के बीच सह–सम्बन्ध के अध्ययन से पता चला कि दोनों चरों के बीच ऋणात्मक सह–सम्बन्ध है अर्थात् परिवार बालक के अन्दर प्रकृति के सौन्दर्य को बढ़ाने तथा अपनी आत्मा या मन को स्वच्छ, सुन्दर तथा पवित्र बनाए रखने की प्रेरणा देते हैं, क्योंकि विद्यार्थी का मन अगर पवित्र और स्वच्छ है तो उसे बुरी से बुरी वस्तु भी अच्छी प्रतीत होगी।

5. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध और विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्यों के बीच सह–सम्बन्ध के अध्ययन से पता चला कि दोनों चरों में सह–सम्बन्ध नहीं पाया गया अर्थात् परिवारिक सम्बन्ध द्वारा विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्य प्रभावित नहीं होते अर्थात् परिवार यह बताता है कि पढ़–लिखकर अपने तथा अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए धन जरूरी है, परन्तु अधिक धन लालसा रखने के लिए मना करते पाये गए।

6. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध और विद्यार्थियों के ज्ञानात्मक मूल्यों के बीच सह–सम्बन्ध के अध्ययन से पता चला कि दोनों चरों में सह–सम्बन्ध नहीं है अर्थात् अधिकतर परिवार के लोग अनपढ़ तथा काम में व्यस्त रहने के कारण अपने बच्चों को उनकी शिक्षा से सम्बन्धित समय नहीं दे पाते जिससे व उनमें ज्ञान की वृद्धि करने में पीछे पाए गए।

7. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध और विद्यार्थियों के सुखवादी मूल्यों के बीच सह–सम्बन्ध के अध्ययन से पता चला कि दोनों चरों में सह–सम्बन्ध है। इससे इंगित हुआ कि पारिवारिक सम्बन्ध से विद्यार्थी के सुखवादी मूल्यों में परिवर्तन आता है। परिवार के सदस्य उन्हें सिखाते हैं कि दूसरों को सुख देने में ही अपना सुख है तथा इसके साथ–साथ विपरित स्थिति में समायोजन करने की भी सीख देते हैं।

8. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध और विद्यार्थियों के शक्ति मूल्यों के बीच सह–सम्बन्ध के अध्ययन से मालूम चला कि दोनों चरों में सह–सम्बन्ध नहीं है

 Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.

अर्थात् परिवार में माता–पिता कई बार बच्चों को छोटी–छोटी बातों पर डाँट देते है जिससे वे अपने मन में छुपे विचारों तथा शक्ति को ठीक से प्रकट नहीं कर पाते तथा पिछड़ जाते हैं।

9. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध और विद्यार्थियों के पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य के बीच सह–सम्बन्ध के अध्ययन से मालूम चला कि दोनों चरों में सह–सम्बन्ध नहीं है अर्थात् परिवार के सदस्य खुद आधुनिकीकरण और पश्चिमीकरण में फंसे रहने के कारण तथा कामकाजी महिलाओं का अपने कीमती समय में से बच्चों के लिए समय नहीं निकाल पाने के कारण वे बच्चों को परिवार की प्रतिष्ठा को बनाए रखने में कोई भागीदारी अदा नहीं कर पाते।

10. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध और विद्यार्थियों के स्वास्थ्य मूल्य के बीच सह–सम्बन्ध के अध्ययन से मालूम चला कि दोनों चरों में सह–सम्बन्ध नहीं है अर्थात् परिवार स्वास्थ्य मूल्यों को बढ़ाने में कोई मदद नहीं कर पाता। बालक की आदत में है कि वे अपने बड़ों का अनुकरण करते हैं तथा शहरों के माता–पिता अपने कार्य के बोझ के कारण खुद प्रातः जल्दी नहीं उठ पाते जिससे विद्यार्थी भी उन्हें देखते हैं तथा देर तक सोते रहते हैं। इस कारण परिवार उनमें इन मूल्यों को बढ़ाने में कोई मदद नहीं करता।

11. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सह–सम्बन्ध के अध्ययन से पता चला कि दोनों चरों में सह–सम्बन्ध हैं अर्थात् परिवार विद्यार्थियों को सीखने के लिए तैयार करते हैं। उनके आत्म–विश्वास को बढ़ाते हैं। उन्हें पढ़ाई के लिए अवसर और संसाधन उपलब्ध कराते हैं तथा उन्हें आगे बढने के लिए अभिप्रेरित करते हैं।

 Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.

सन्दर्भ सूची

कालडा राजकुमार एवं मनानी प्रीति (2013), गृह पर्यावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव, परिप्रेक्ष्य, अंक 3, पेज 97–103.

कुलश्रेष्ठ एस.पी. (2008), शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पेज 383–423.

पाण्डेय श्री निवास और पाण्डेय राजेश कुमार (2009), जवाहर नवोदय विद्यालय में किशोरावस्था के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, इंडियन जरनल ऑफ टीचर एजूकेशन अन्वेषिका, एन.सी.टी.ई. वॉल्यूम 6 अंक 2 पेज 133–141.

भटनागर सुरेश (2003), बाल विकास एवं पारिवारिक सम्बन्ध, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पेज 363–411.

शर्मा रेखा और राय राकेश (2013), किशोर अपराधियों के पारिवारिक तथा भौतिक वातावरण का सामाजिक आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में अध्ययन, शिक्षा और मनोविज्ञान अनुसंधान, वॉल्यूम 3ए अंक 1, पेज 126–128.

 Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.